इज़्ज़त की बारात

एक सज्जन गंगा नहाने को उतावले थे, पानी से डर लगता था तो सोचा क्यों न बेटी की बारात करके ही गंगा नहा लिया जाए, सेव वाटर कैंपेन भी हो जाएगी और बेटी की शादी भी। इधर इनमें एक और गुण था इज्ज़त की रोटी कमाते थे और इज्ज़त से ही खाते थे। बेटी भी घर की इज्ज़त ही होती है। अभी कलियुग ठीक से आया नही है इसलिए ऐसों को दामाद खुद इज्ज़त से ढूंढना पड़ता है, और अगर कोई लड़की पास आकर कह दे कि मैं पिंटू को प्यार करती हूँ तो पिताजी बेटी को तुरंत समझाने लगते है बेटी में तुम्हारा सगा बाप हूँ, लेकिन आजतक किसी ने बेटी को अपनी डीएनए रिपोर्ट तो दिखाई नहीं। हम लोग सिर्फ कहने भर से मान लेते है फिर भी लोग कहते है की बेटा या बेटी मेरा कहना नहीं मानते, अरे आपने कहा कि मैं ही तेरा बाप हूँ उसने मान किया और क्या माने? बाप रूप में स्वीकार कर लिया और इससे बड़ी बात वो क्या माने?

खैर लड़का ढूँढो आन्दोलन के दौरान कई प्रत्याशी मिले, कुछ कुलीन, कुछ कुलहीन, कुछ अभिशप्त, कुछ परमतृप्त, लेकिन जिस तरह मतदान किसी एक को ही कर सकते है वैसे ही कन्यादान भी एक को ही किया जा सकता है। जो प्रत्याशी ये दान लेने को आगे आये उनमें एक नामी बिजनेसमैन का बेटा भी था। अच्छा खासा कारोबार, कोठी, फार्म हाउस, कारें, सब कुछ था और इज्ज़त भी थी। पूज्य पिताजी की आँखें गिद्ध की तरह सीधे ताड़ गई की यही एलिजिबल है, अब वो

© www.priyankdubey.com

सीधा निशाने पर था। एक बार टारगेट सेट करने के बाद जैसे चील सीधा हमला करती है, जैसे क्रूज़ मिसाइल हमला करती है, उनका भी हमला हो चुका था मैं इसके साथ ही अपनी बेटी के हाथ पीले करूँगा।

बेटी घर की लक्ष्मी होती है और पराया धन भी। लेकिन लक्ष्मी कभी पराया धन नहीं होती। कहीं होती है भला? लक्ष्मी तो सिर्फ अपनी होती है परायी हो ही नहीं सकती। एक साडी में शादी करवाने के पवित्र विचारों से लिप्त लड़के के निर्लिप्त इज्ज़तदार पूज्य पिताश्री हाल में एक बैंक घोटाले में वांछित रह चुके थे, कुछ माननीय उनके साथ आये तो मामला थोडा दब गया और उनकी इज्ज़त जाते जाते बची क्योंकि विरोधियों ने पेड मीडिया का भरपूर इस्तेमाल करने की कोशिश की और उनकी छवि को बदनाम करने की साजिश रची लेकिन जाको राखे साइयान मार सके न कोई। बदनामी से बचे तो नहीं, लेकिन उतनी नहीं हो पाई जितनी हो सकती थी। गिरफ्तारी से इसलिए बच गए क्योंकि अंधे कानून के देवता ने उनकी आँखों में ईमानदारी देख कर अग्रिम ज़मानत दे दी थी।

बेटे की शादी बिना एक पैसे लिए करने को राज़ी हुए तो इज्ज़त बढती है, इनको वैसे भी अभी इज्ज़त को थोडा स्टॉक करने की ज़रूरत थी, हाल ही में कुछ इज्ज़त खर्च हो गयी थी। ऐसे लोग मेरी नज़र में महात्मा गाँधी से कम नहीं जो दहेज़ में यकीन नहीं रखते, बहु घर बियाह के ला आ रहे हो कोई बेटे को थोड़े ही बेच के आये हो जो दहेज़ चाहिए।

© www.priyankdubey.com

यहाँ इज्ज़त मुफ्त में मिल रही थी तो ले ली। वर्ना वो तो खरीद भी सकते थे। आजकल इज्ज़त ऑडिटोरियम और बड़े बड़े स्टेज पर बिकती भी है, और लोग मुस्कुराते हुए इज्ज़त खरीदते है, कोई मुख्यमंत्री के हाथ से खरीदता है कोई किसी नेता के, जो ग्राहक कम पैसे वाले होते है उनको इज्ज़त किसी मोहल्ले के इज्ज़तदार के हाथ से मिलती है, कुछ लोग दुनिया के लोकलाज के डर से कमरा बंद करके इज्ज़त लूटते है, और इज्ज़त खुद को लुटने देती है, इज्ज़त मुफ्त में भी मिल जाती है और बिकती भी है। लेकिन फ्री में इज्ज़त मिले तो मज़ा और ही होता है।

लड़के की शादी के बाद बाप भी खुश, और लड़के को तो होना ही था, नयी नयी शादी के बाद लड़का खुश ही होता है लेकिन कुछ सिर्फ दिनों तक। इधर दूसरे के घर की इज्ज़त भी अपनी इज्ज़त बढ़ने से काफी खुश हुयी थी कहाँ आल्टो में चलती थी यहाँ ऑडी से कम कुछ है नहीं, भूमि कठोर पे रात कटे कहाँ कोमल सेज पे नींद न आवे। एक दिन अचानक से मंत्री जी इज्ज़त लेने के मामले में बरामद हुए तो मीडिया वालों ने इज्ज़त उछाली नतीजतन मंत्रीपद चला गया। जिसके दुष्प्रभाव से बैंक घोटाले का मामला फिर खुल गया और लड़के के बाप की इज्ज़त के साथ बारात निकली। लड़की के बाप का मानना था कि निर्दोष को फसाया गया है वरना मेरे समधी तो साधू है। लड़के की शादी में एक रूपया दहेज़ नहीं लिया। लेकिन उनके कहने से क्या होता इज्ज़त की बारात तो घर से निकल कर जेल तक पहुँच चुकी थी।

© www.priyankkubey.com